बड़ो विलास जो होवहीं, सो क्योंकर कहों इन मुख ।
लाहा लियो साथ में, सो कह्यो न जाए या सुख ॥२८॥

उस समय के सुन्दरसाथ ने सेवा करके जो सुख और आनन्द लिया उसका इस मुख से वर्णन नही किया जा सकता है ।

बड़ा सोर हुआ साथ में, कांप्या कुली दज्जाल ।
ए आये मेरे दुस्मन, मोकों करे बेहाल ॥२९॥

इस प्रकार लोगों का श्री जी की चर्चा पर विश्वास देखकर वहां के पहले वाले गुरूजनों के अन्दर बेईमानी बैठ गई । उन्होंने यह समझा कि श्री जी हमारे दुश्मन हैं । इनके यहां रहने से हमारी कोई भी मान्यता नही रहेगी, जिससे हमारी आमदनी कम होने से हमारी सांसारिक दशा खराब हो जायेगी ।

महामति कहे ए साथ जी, ए बीतक दीप बन्दर ।
लड़ाई दज्जाल सों, पहुंचाई सख्ती मोमिनों पर ॥३०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि यह दीपबन्दर की बीतक है । फिर उन गादी पति गुरूजनों ने दिल में बेईमानी आ जाने से फिरंगी बादशाह से मिलकर मोमिनों पर कैसे संकट ढाये उसकी अब बीतक कहता हूं ।

(प्रकरण २१, चौपाई ९४८)

फेर कहों दीप बन्दर की, जो लड़ाई दज्जाल बीतक ।
तो मेहर में राखे मोमिन, करी सुभानल हक ॥१॥

दीप बन्दर के उन गादी पतियों के द्वारा सुन्दर साथ पर किस तरह से मुसीबत आई परन्तु श्री राज जी महाराज ने मेहर कर मोमिनों को किस प्रकार चरणों में रखा तथा सकंट नही आने दिया ।

कथा बांचने के आसन, सो हुये दुसमन ।
श्रोता जो थे उनके, सो आय देने लगे श्रवण ॥२॥

दीपबन्दर के जितने भी कथा सुनाने वाले पंडित एवं आचार्य थे वे श्री जी के दुश्मन हो गए क्यों कि उनकी कथा को सुन कर भेंट चढ़ाने वाले श्री जी के चरणों में चर्चा सुनने आते थे ।

सवाल पूछे जाए तिनको, हमको देओ जवाब ।
इनको अर्थ आवे नही, रख न सके ताब ॥३॥

उन्हीं आचार्यो के शिष्य जब स्वामी जी से अखंड गोलोक तथा वृन्दावन की चर्चा सुनकर इसके विषय में उन आचार्यों से प्रश्न पूछते थे तो वे महानुभाव अपने शिष्यों के प्रश्नों का उत्तर भी नही दे सकते थे। उनके प्रश्नों के उत्तर देने की योग्यता उनमें नही थी ।

Njanand App

तब चुगली को चित्त में लिया, कोई करे उपाए ।
इनको इहां से काढ़िये, सब झगड़ा कीजे मिल धाए ॥४॥

तब उन आचार्यजनों ने मिलकर सोचा कि जब तक श्री जी को शहर से निकलवायेंगे नही तब तक हमारा दीप बन्दर में रहना भारी है इसलिए इनको निकालने के लिए कोई उपाये करें एवं मिलकर इनसे झगड़ा करें ।

मिल एक चुगल ठाढ़ा किया, करो फिरंगी से अरज ।
ये देव तुम्हारे निन्दत, करो हमारी गरज ॥५॥

सब कथा वाचकों ने मिल कर एक चुगल को जो फिरंगी बादशाह का मित्र था उसे पैसा देकर इस कार्य को उसे सौंपा और चुगल से यह कहा कि तुम फिरंगी बादशाह से यह कहो कि कोई साधु महात्मा इस नगर में आया है तथा तुम्हारे देवों की निन्दा करता है । यह सुन कर फिरंगी बादशाह साधु महात्मा को इस नगर से निकाल देगा । तुम हमारे वास्ते यह काम करो ।

चुगल केते दिन पीछे, गया फिरंगी पास ।
एक सख्स मिला दरबार में, इनही कारज की आस ॥६॥

वह चुगलखोर कुछ दिनों के बाद अवसर देख कर अपने मित्र फिरंगी बादशाह के पास साधु महात्मा की चुगली करने के लिए गया परन्तु श्री राजजी महाराज जो सदा मेहरबान हैं और किसी भी कीमत पर अपने मेमिनों पर संकट नहीं आने देते । सुन्दरसाथ को बचाने के लिए उस चुगलखोर के मित्र जैसा रूप धारण करके फिरंगी बादशाह के कमरे के बाहर खड़े हो गए ।

तब उन सख्स ने कह्या, तुम कहां जात कौन काम ।
आए उतावले दरबार में, इन बेर इस ठाम ॥७॥

जैसे ही चुगल खोर वहां गया श्री राजजी उसके मित्र के भेष में खड़े ही थे तो उन्होंने पूछा कि हे भाई! तुम इस समय किस जरूरी काम के लिए आये हो क्यों कि तुम घबराये से लगते हो ।

तब कह्या चुगल नें, कोई नया साध आया इत ।
सो निंदत सब देवों को, ताकी चुगली को जात तित ॥८॥

तब उस चुगल खोर ने अपने मित्र जैसे रूप धारण किए हुए श्री राज जी से कहा कि हे मेरे यार ! मैं तुम्हारे से कुछ छिपा नही सकता । सुना है कि कोई साधु दीप बन्दर में आया है जो अपनी चर्चा में सब देवों की निन्दा करता है । उसकी चुगली करने के लिए बादशाह के पास आया हूं ।

Nijanand App

तब उनने कही तें निंदा, सुनी अपने कान ।
के तुम कही काहू की कहत हो, बिना करें पहिचान ॥९॥

तब चुगल खोर के उस मित्र ने पूछा- कि तुम सच सच बताओ कि क्या तुमने उस साधु महात्मा के दर्शन किए हैं तथा उनकी चर्चा में देवी देवताओं की निन्दा सुनी है या किसी की कही हुई बात को कहते हो ।

तब उनने कही मोसो, नही उन साध पहिचान ।
मैं निन्दा कानों भी न सुनी, कही कहों औरों की जान ॥१०॥

तब चुगल खोर ने कहा कि ना तो मैं उस साधु महात्मा को जानता पहचानता हूं और न ही मैंने उनका दर्शन किया है, न ही उनकी चर्चा सुनी है मैं तो यहां के कथा वाचकों से पैसे लेकर यह कार्य करवाने के लिए आया हूं ।

ऐसा काम करत है, बिन देखे अपने नैन ।
फिरंगी ऐसे जालिम, सुनत तुम मुख बैन ॥११॥

तब चुगलखोर के उस मित्र ने कहा कि अपने नैनों से उस साधु को देखे बिना तथा कानों से उनकी चर्चा सुने बिना वह जालिम बादशाह तुम्हारा मित्र होने के कारण तुम्हारी बात पर अमल करेगा तथा उस साधु पर जुल्म ढाएगा ।

तुरत अमल करत है, बहुत बुरा ए काम ।
तिन साध को कसाला, देवें फिरंगी इस ठाम ॥१२॥

तुम्हारी बात को सुनकर बादशाह तुरन्त अमल तो करेगा लेकिन तुम यह देख लो कि यह कितना बुरा काम है । बादशाह तो निश्चय ही तेरे कहने पर उन साधुओं पर कोई न कोई संकट डालेगा, इसमें कोई सन्देह नही है ।

तो क्या हाल तुम्हारा होवहीं, कछु होयगा तुम्हें दुख ।
उनके दिल भली लगी, बड़ो जो पायो सुख ॥१३॥

तो उस साधु महात्मा का मालिक (यार) परमात्मा जब देखेगा और तेरी इस करनी के बदले उस परमात्मा की ओर से जब तुम्हारे ऊपर दुःख आएंगे तो क्या तुम उसे सहन कर लोगे ? यह सुनते ही उसकी आंखें खुल गई । उसे अपने मित्र की बातें अच्छी लगी और वह बहुत प्रसन्न हुआ ।

वह सुनत ही पीछे फिरया, ए कहके भया अलोप ।
फेर देखे तो उत ना पावहीं, होय के गया गोप ॥१४॥

वह चुगलखोर ऐसी बात को सुनकर वापिस घर आने लगा तो लौटकर उसने अपने मित्र को बहुत देखा और ढूंढा पर वह तो ऐसी बात कहकर अदृश्य हो गया था ।

Nijanand App

साथ में खल भल पड़ी, हुआ चुगल का डर ।
भागे चारों तरफों, खाड़ी गये उतर ॥१५॥

उधर जब सब सुन्दरसाथ ने यह सुना कि चुगलखोर बादशाह के पास हमारी चुगली करने गया है तथा बादशाह निश्चय ही हमारे ऊपर संकट ढाएगा तो कई सुन्दरसाथ ईमान से गिर गए तथा दीपबन्दर से बाहर खाड़ी पार करके छिप गए ।

कोई सहर में छिप गये, कोई कहें हम न जावें इत ।
कोई कहे हम न सुनें, कबहूं न गये तित ॥१६॥

कुछ सुन्दरसाथ डर के मारे शहर में ही छिप गए तथा ईमान से गिरकर कहने लगे कि हम बादशाह से कह देंगे कि हम कभी भी उन महात्मा की चर्चा सुनने न तो गए थे और न कभी जाएंगे ।

इन भांत दज्जाल नें, सब के लिए हथियार ।
कोई खड़ा न रह सकया, तरफ धनी निरधार ॥१७॥

इस प्रकार माया के इस झूठे बवंडर ने सुन्दरसाथ के ईमान को गिरा दिया । कोई भी पक्का ईमान लेकर डटा नही रहा ।

एक जयराम खड़ा रह्या, और इनके घर के लोक ।
इनों आपोपा दिया, रहे अपने जोक ॥१८॥

केवल एक जयराम भाई तथा इनके परिवार के सब लोग ईमान पर डटे रहे तथा अपने आनन्द मंगल में गाते रहे । क्योंकि उन्होंने अपने आप को श्री जी पर न्योछावर कर दिया था ।

ए तो नजर दज्जाल की, दिखाए अजमाए इन ।
खड भड पड़ी साथ में, डगे इत सैंयन ॥१९॥

हे सुन्दरसाथ जी ! यह तो सुन्दरसाथ की माया में परीक्षा लेने के लिए दज्जाल का नाटक दिखाया था । जिससे सुन्दरसाथ अपना ईमान खो बैठे ।

वह तो सोर ऊपर का, स्याह मुंह भए चुगल ।
फेर साथ बैठा सब मिलके, करनें लगे नकल ॥२०॥

यह तो झूठा शोर शराबा ही था । जब दरबार से चुगलखोर शर्मिन्दा होकर वापिस लौटा तथा कुछ हुआ ही नही तब दूसरे दिन सुन्दरसाथ शर्मसार होकर श्री जी के चरणों में आए तथा अपनी बीती बात सुनाकर एक दूसरे की नकल करने लगे ।

Nijanand App

हांसी हुई साथ में, कहने लगे बीतक ।
भूल मानी भागते, आगे बैठ के हक ॥२१॥

दूसरे दिन श्री जी के चरणों में बैठकर दज्जाल के डर से भागे सुन्दरसाथ ने अपनी बीती बातें सुनाकर अपनी भूल मानी ।

फेर श्री राजें लिया दिल में, क्योंए इहां से पावें निकसन ।
साथ जुदा जुदा काढ़ना, क्यों इकट्ठे होए सैयन ॥२२॥

फिर आप श्री जी ने दिल में लिया कि मुझे दो साल यहां बैठे-बैठे हो गए । मुझे यहां से किसी ओर स्थान पर चलना चाहिए क्योंकि ब्रह्मसृष्टि तो जुदा-जुदा स्थानों में उतरी है । उन सबको श्री राजजी की वाणी सुनाकर इकट्ठा करना है ।

इन उपाय के वास्ते, आये दीप मारी आरबन ।
आई श्री बाई जी बंध में, तब चले छुड़ावने तिन ॥२३॥

श्री राजजी के हुकम से ऐसा कारज कारण हुआ कि अरब के छापामार लूटेरों ने दीप पर आकर छापा मारा और कई लोगों को उठाकर ले गए जिसमें बाई जू राज जी (तेज कुंवरी) भी बन्ध में आ गई । बाई जू राज "श्री जी" का दीपबन्दर में आना सुनकर यहीं पर आ गईं थीं । अब उन सुन्दरसाथ को छुड़ाने के लिए श्री जी दीपबन्दर से चले ।

नवी पोर बन्दर पाटन, सब ठौरों देखा फेर ।
काहू न हुआ मौयसर, के मोहजल की उठी लहर ॥२४॥

दीपबन्दर से चलकर स्वामी जी नवी पोर बन्दर पाटन आए । बन्ध में आए हुए सुन्दरसाथ को वहां बहुत खोजा किन्तु कहीं से कोई भी सूचना नही मिली । मोहजल का यह ऐसा संकट आ पड़ा था ।

साथ में खल भल पड़ी, दज्जालें किया जोर ।
ठौर ठौर फितने उठे, करनें लगे सोर ॥२५॥

उधर दीपबन्दर में ऐसी घटना होने पर सुन्दरसाथ के ईमान में खलबली मच गई । ऐसे मौके पर उन कथावाचकों को बातें बनाने का मौका मिल गया और वे कई प्रकार की अनर्गल बातें करने लगे ।

इहां सेती आये कच्छ, थावर दिया साथ ।
मंडई मिने आये के, साथ के पकड़े हाथ ॥२६॥

यहां से कच्छ आये जहां उनको थावर भाई मिला । थावर भाई ने श्री जी का साथ निभाया । तथा उनके साथ आये । वहां कुछ सुन्दरसाथ रहते थे । उनको इकट्ठा करके श्री जी ने चर्चा वाणी सुनाई ।

Nijanand App

तहां प्रागमल कुंवरबाई, केतेक रहवे साथ।
भूल गये साथ चरचा को, लई दज्जाल सों बाथ ॥२७॥

वहां प्रागमल कुंवरबाई तथा और भी कई सुन्दरसाथ रहते थे जो परमधाम की चर्चा भूलकर माया में मिलकर माया के जीवों जैसे ही हो गये थे।

तहां खण्डनी करके, फेर जीवते किये सब को।
ऐ हाल तुम्हारा क्यों हुआ, रहके माया मों ॥२८॥

मंडई के सुन्दरसाथ को इकट्ठा करके परमधाम, ब्रज तथा रास की चर्चा सुनाकर वहां के सब सुन्दर साथ की आत्मा को जागृत किया तथा कहा कि माया में आकर तुम्हारी हालत ऐसी हो गई है कि तुम माया के जीवों जैसे ही हो गये हो।

अब जागो दिन आइया, धाम चलने का।
अब कहा लों खेल देखने, रहोगे माहें माया ॥२९॥

श्री जी ने चर्चा सुनाते हुए कहा कि यह तीसरा ब्रह्मांड जागनी का है। जागो और वाणी से अपने धनी की पहचान करके घर चलो। इस माया में रह कर कहां तक इस झूठे खेल को देखते रहोगे ?

ए काहू के रही है, इनकी कौन प्रतीत।
तुम क्या करोगे इनको, रहो दुख देखनें इत जित ॥३०॥

क्या आज दिन तक इस झूटी माया के कुटुम्ब कवीले में किसी का कोई बना। क्या किसी ने किसी का साथ निभाया। मरते समय भी क्या किसी के साथ माया गई। ऐसी माया और कुटम्ब कवीले इकट्ठे करके क्या करोगे। जितने दिन यहां रहोगे दुःख ही दुःख मिलेगा।

तुम तो चतुर प्रवीन हो, है तुम्हारा तन धाम।
तिनको भूल के माया में, करो कुफर काम ॥३१॥

हे मेरे परमधाम के सुन्दरसाथ जी ! आपके पास तो जागृत बुद्धि का ज्ञान है माया और परमधाम में क्या अन्तर है आप इसे पहचानते है। आपके मूल तन परमधाम में हैं। ऐसे अखण्ड घर परमधाम के सुखों को भूल कर झूटी माया के कुफ्र भरे कामों में लग कर भूले पड़े हो।

तुमको ऐसा न चाहिये, जो भूलो अपनो ठौर।
धाम लीला को छोड़ के, जाय काम करो और ॥३२॥

उस अखण्ड परमधाम की लीला के सुखों को छोड़कर मिथ्या माया के कामों में तुम्हें नही उलझना चाहिए।

Nijanand App

तुम देखो ओ घर अपना, हमको क्या बताया श्री राज ।
हम खड़े कौन भोम में, हम आये थें कौन काज ॥३३॥

श्री राजजी महाराज ने हमको खेल में उतरते समय क्या बताया था ? अपने उस अखण्ड घर को पहचानो। हम अखण्ड धाम को छोड़कर किस झूठी जमीन में खड़े हैं । हम आये थे माया का खेल देखने किन्तु उल्टे खुद माया में माया जैसे ही बन गये ।

उहां एक दिन रहके, किये जीवते सब ।
चरचा कर समझाए के, कपाइए आये तब ॥३४॥

मंडई में एक दिन रहकर सब सुन्दरसाथ को वाणी चर्चा सुना कर जगाया तथा वहां से कपाइये पहुंचे।

हरबंस ठाकुर तहां रहे, अपने कबीले समेत ।
तहां आय बासा किया, जान धाम का खेस ॥३५॥

कपाइये में श्री जी के बड़े भाई हरवंश ठाकुर अपने परिवार सहित रहते थे । पर श्री जी तो परमधाम के नाते से ही इनके घर आये ।

चरचा करी तिनके घरों, कहे खण्डनी के बचन ।
सबे हुये जागृत, दो दिल हुआ रोसन ॥३६॥

वहां श्री जी ने सबको इकट्ठा करके खण्डनी करते हुए खूब वाणी चर्चा सुनाई । सबको वह चर्चा अच्छी लगी तथा सबके मन की मलीनता दूर हो गई तथा उनकी आत्मा जागृत हो गई शारीरक और आत्मिक रिशते की पहचान हो गई ।

भेजे बिहारी जी के पास, जाये करो दीदार ।
तुमको ऐसा न चाहिये, जो छोड़ो धनी निरधार ॥३७॥

यहां से श्री जी ने हरबंश ठाकुर को सद्गुरू श्री देवचन्द्र जी की गादी पर विराजमान बिहारी जी के पास भेजा । और कहा कि आपको ऐसा नही चाहिए कि श्री राज जी को भूल कर झूठी माया में लगो।

तहां से आये भोजनगर, आये घर वृन्दावन ।
मिलाप किया तिन सों, हुआ खुसाल मगन ॥३८॥

कपाइये से चलकर आप श्री जी भोजनगर आये जहां हरिदास जी के पुत्र वृन्दावन रहते थे । उनसे आ कर मिले । वे श्री जी के दर्शन करके अति प्रसन्न हुए ।

Nijanand App

कर आदर भली भांत सो, अरूगाये श्री राज ।
लगे बातां पूछने, हम सों कहो काज ॥३९॥

वृन्दावन अपने पहले के सुन्दरसाथ थे । उन्होंने श्री जी का बहुत सत्कार किया । मेरे धाम के धनी आये है । इस भाव को लेकर उसने श्री जी को आरोगाया । उसने श्री जी से पूछा कि आप किस कार्य के लिये पधारे है ।

कही बात बीतक की, भई चरचा इन समें ।
खण्डनी के कहे बचन, सुख पाया तिन सें ॥४०॥

तब श्री जी ने दीपबन्दर से लेकर भोजनगर तक जगह-जगह पर कैसे जागनी हुई उसे कह सुनाया और वृन्दावन को माया में भूल जाने के कारण खण्डनी करके चर्चा सुनाई । जिससे उसे अति सुख हुआ।

फेर के चरचा भई, बचन खण्डनी के ।
वैराग पूरा राज को, सो घात बतावें ऐ ॥४१॥

इस समय श्री जी को अति वैराग्य आ चुका था इसलिए फिर चर्चा जब शुरू हुई तो माया का रूप झूट और पाखण्ड है एवं परमधाम ही केवल सुख का मूल ठिकाना है, ऐसी चोट वाली चर्चा सुनाकर उसकी आतम को जगाया ।

सब को मीठी लगी, होय चरचा जो हाल में ।
मकसूद होवे तिनसों, सब सक जावे सुन के ॥४२॥

श्री जी के मुखारविन्द से आवेश भरी चर्चा, भले ही वह खण्डनी की थी, सुनकर सबको मीठी लगती थी क्योंकि सभी अपने भले के लिए अपने ही लिए सुनते थे । इस चर्चा को सुनकर संशय मिट जाते थे तथा अपने मूल स्वरूप की पहचान होती थी ।

जो मलीनता मन की, सो सब हुई दूर ।
बड़ा सुख पाया इन समें, करते धाम मजकूर ॥४३॥

अखण्ड परमधाम की चर्चा को सुनकर सुन्दरसाथ के दिलों की मलीनता दूर होती थी तथा सबको अपार सुख मिलता था ।

दिन दो एक रहके, फेर नलिये पहुंचे ।
तहां सेती चलके, आये ठट्ठे नाथे के ॥४४॥

भोजनगर में दो-चार दिन रहकर नलिये पंहुचे । नलिये से चलकर सिंध देश में, ठट्ठे नगर में नाथा जोशी के घर आए ।

Nijanand App

पूछत घर उनका, नाथे सों भयो मिलाप ।
मिलते ही सुख उपज्या, मिट गयो सब ताप ॥४५॥

ठट्ठे नगर में वे नाथा जोशी का घर पूछ ही रहे थे कि उन्हीं से मिलाप हो गया । नाथा जोशी ने जैसे ही श्री जी के दर्शन किए तो वह माया के दुःख भूल गए ।

बात लगे पूछने, कौन भाग हैं हम ।
उहाँ सेती इहाँ लों, धरे मुबारक कदम ॥४६॥

तब नाथा जोशी ने श्री जी की आदर सहित पधरावनी की और कहने लगा कि हमारे कौन से भाग्य जागृत हुए हैं कि आप गुजरात से चलकर हमारे यहां पधारे हैं और आपके मंगलमई चरणों के हमें दर्शन हुए हैं ।

महामति कहे ऐ साथ जी, दीप से ले ठट्ठा में ।
अब फेर कहों ठठे की, भई बीतक जो हमसे ॥४७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि दीपबन्दर से लेकर ठट्ठे नगर तक जगह जगह जिन सुन्दरसाथ की जागनी हुई उस बीतक को सुनाया है । अब स्वामी लालदास जी कहते हैं कि ठट्ठे नगर में मेरी कैसे जागनी हुई, उसे मैं बताता हूं ।

(प्रकरण २२, चौपाई ९९५)

अब कहों बीतक ठट्ठे की, याद करो मोमिन ।
जो दिखाया खेल तुम को, बीच जिमी नासूत सुभान ॥१॥

अब ठट्ठे की बीतक कहता हूं । हे साथ जी ! उसे सुनकर याद कीजिए कि इस मृत्युलोक में श्री राजजी महाराज ने माया का खेल हमें कैसे दिखाया है ।

श्री जी आये ठट्ठे में, रहे दिन दस-बार ।
फेर लाठी बन्दर आये, हुए इत हुसियार ॥२॥

श्री जी १०-१२ दिन ठट्ठे नगर में रहे फिर उन्होंने समुद्र के किनारे लाठी बन्दरगाह (करांची) से अरब चलने के लिए बड़ी चौकसी से तैयारी की ।

विस्वनाथ भट्ट मिले, आये देवे के दुकान ।
उन आदर बड़ो कियो, थी ऊपर की पहिचान ॥३॥

लाठी बन्दरगाह में अपने एक सुन्दरसाथ विश्वनाथ भट्ट मिले । वे स्वामी जी को लेकर देवे भाई की दुकान पर आ बैठे । उसे भले ऊपर की पहचान थी फिर भी उसने आदर सत्कार के साथ श्री जी को बिठाया ।

Njanand App